पंजीयन क्र. 50309/85 के अन्तर्गत भारत सरकार के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्र. म.प्र./261/ भोपाल/2006-08

होली

सफ़दर हाश्मी

होली को सब क्यों कहते हैं रंगों का त्यौहार
गिनती के छह-सात रंग ही दिखते हैं हर बार।
काले-पीले, हरे, बैंगनी, नीले, गुलाबी, लाल
इन्हें छोड़कर किसी रंग के बिकते नहीं गुलाल।
हम से पूछो तो होली है बेरंगा त्यौहार
उस से ज़्यादा रंगीं होता सब्ज़ी का बाज़ार।
अदरक, लस्सन, नींबू, बैंगन, शलजम और चुकन्दर
प्याज़, टमाटर, गोभी, मैथी, हर दुकान के अन्दर।
कोई सलेटी, कोई बदामी, सिंदूरी, उन्नाबी
कोई दूधिया, कोई सुनहरा, खाकी या नारंगी।
कोई बसन्ती, कोई नींबुई, कोई मोतिया होता
कोई फिरोज़ी, कोई भगवा, कोई गेरुआ होता।
फूल रुपहले और सफेद और अस्मानी होते हैं
ऊदे, भूरे, तरबूज़ी और सरसोंई होते हैं।
चिड़ियों, कीड़ों, जानवरों के रंग अगर गिनवाएँ
जीवन भर बस बैठे-बैठे उनको गिनते जाएँ
आँख खोलकर अगर कोई दुनिया को देखने जाए
होली का भरपूर मज़ा हर रोज़ उसे मिल जाए।
सुबह सवेरे रंगीं कपड़े पहनके बादल आएँ
चिड़ियाँ रंगीं पर फैलाएँ ऊपर-नीचे जाएँ।
फूलों के संग करें तितलियाँ दिनभर हँसी ठिठोली
रोज़ शाम को सूरज खेले आसमान से होली।

स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो प्रकाशक, मुद्रक सी. एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक, एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल-462016, (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोनः 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादकः सुशील शुक्ल।